जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

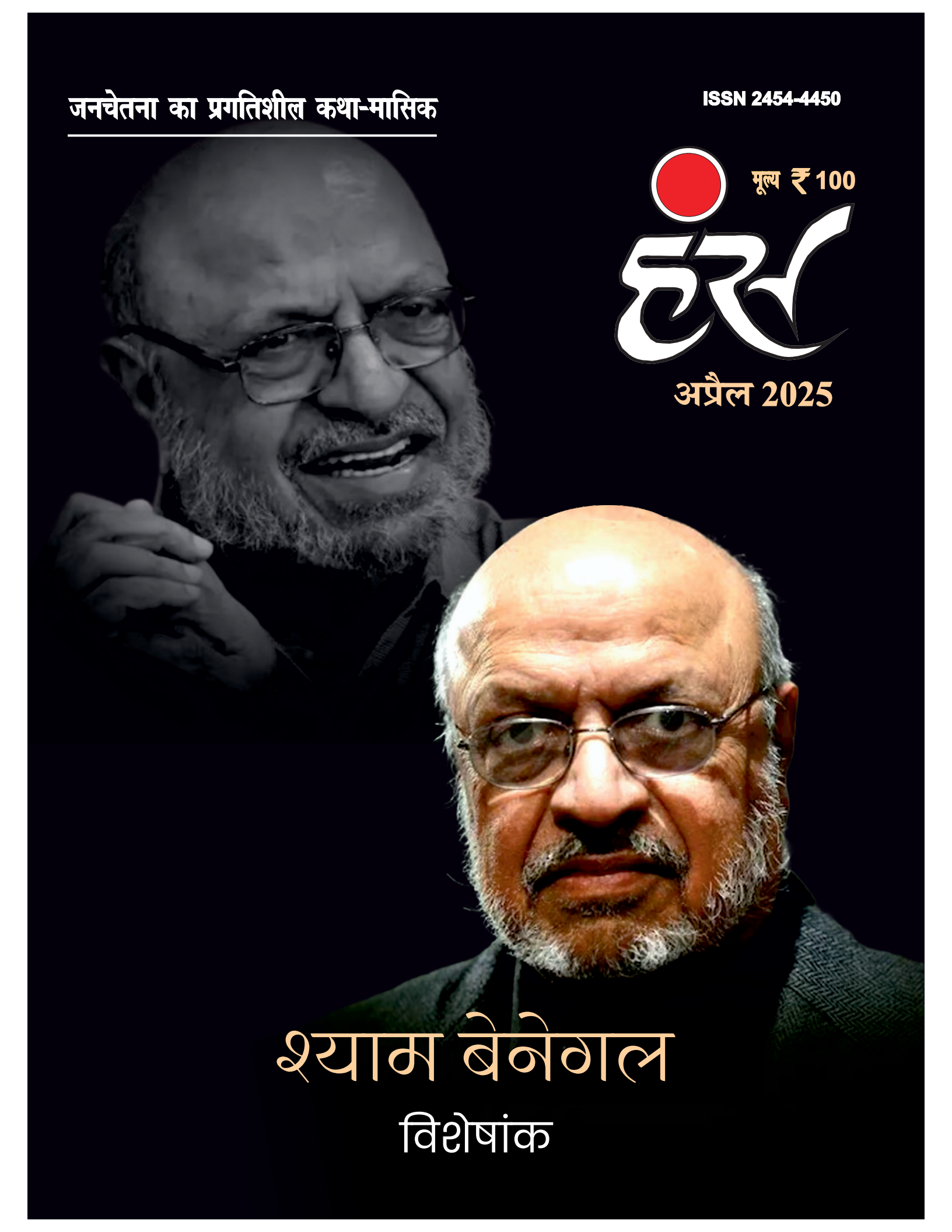

मूल्य ₹ 100

हंस

अप्रैल 2025

श्याम बेनेगल

विशेषांक

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
फ़ोटो साभार
अतुल तिवारी, असीम सिन्हा, सैबल चटर्जी

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट :www.hanshindimagazine.in

इस अंक का मूल्य : 100 रुपए

सामान्य अंक मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

अप्रैल, 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-462 वर्ष : 39 अंक : 9 अप्रैल 2025

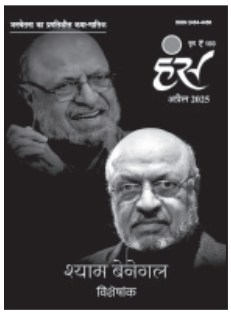

आवरण : गूगल साभार

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

अतिथि संपादक : अनवर जमाल

इस अंक में

संपादकीय
4. दो पाटन के बीच में... : संजय सहाय

अतिथि संपादकीय
8. श्याम का सलेटी सिनेमा : अनवर जमाल

अपना मोर्चा
10. पत्र

मेरी नज़र में
16. वास्तविक दुनिया का चलचित्र : शमा ज़ैदी
17. सामाजिक यथार्थ को... : जावेद सिद्दीक़ी
20. भारतीय सिनेमा के दिग्गज... : मोहन आगाशे
22. श्याम बेनेगल की विरासत : सुनील शानबाग

अंकुर/निशांत/मंथन
25. 'मंथन' को कभी नहीं... : नसीरुद्दीन शाह
26. दुनिया को नए दृष्टिकोण... : शबाना आज़मी
28. अन्याय के ख़िलाफ़ प्रतिबद्ध : अतुल तिवारी
30. एक दूरदर्शी रचनात्मक... : राजशेखर पंत

भूमिका
33. स्त्री अस्मिता की पड़ताल : दिलीप शाक्य

जुनून/कलियुग/त्रिकाल
37. रचनात्मक-सामंजस्यपूर्ण अनुभव : सुषमा सेठ
38. 'जुनून' एक ऐतिहासिक चेतना : ख़ालिद जावेद
40. बेनेगल के लिए अतीत सदैव... : सैबल चटर्जी

भारत एक खोज/संविधान/यात्रा
43. जिसने मुझे बेहतर इंसान बनाया : राकेश शर्मा
46. श्याम बेनेगल की भारत खोज : निरंजन पंत
49. समानांतर-लोकतांत्रिक... : अभिषेक कुमार
50. धारावाहिक 'यात्रा' : विपिन जैन

सूरज का सातवाँ घोड़ा
52. जीवंत होता सूरज का... : रजित कपूर
53. संश्लिष्ट और बहुस्तरीय फ़िल्म : विजय रंचन

मम्मो/सरदारी बेगम/ज़ुबैदा
59. श्याम बाबू का ऋणी... : मनोज वाजपेयी
60. अपने तरीक़े से ज़िंदगी जीने... : दिनेश श्रीनेत

मंडी/सुसमन/हरी-भरी
64. सच दिखाने का अद्भुत नज़रिया : नंदिता दास
65. आत्मीय-स्नेही व्यक्तित्व : राजेश्वरी सचदेव
67. स्त्री छवि का विस्तार : रिज़वानुल हक़
70. ज़िंदगी का ताना-बाना : रक्षा गीता
73. औरत की उम्मीदों का... : वैशाली कटारिया

समर/वेलकम टू सज्जनपुर/ वेल डन अब्बा
76. हिंदी सिनेमा का ध्रुवतारा : हर्ष मंदर
78. संघर्ष के लिए ताक़त देती... : अशोक मिश्रा
84. संवेदनशील तरीक़े से हास्य... : दीपा गहलोत
86. सेल्युलाइड के पर्दे पर रचा... : जीतेन्द्र गुप्ता

द मेकिंग ऑफ़ द महात्मा/ नेताजी सुभाष चंद्र बोस.../ मुजीब : द मेकिंग ऑफ़ ए नेशन
93. वे फ़िल्में जिन्होंने मेरे पूर्वाग्रह... : अतुल तिवारी
96. सिनेमा को समर्पित एक निर्देशक : रशीद
97. बिना वस्तुनिष्ठता के फ़िल्म प्रोपेगेंडा... : (श्याम बेनेगल से अरविंद दास की बातचीत)
100. सहज-सरल... : पल्लवी शिल्पी कचलवार

छायांकन/संपादन/संगीत
103. कथात्मक दृश्यांकन की बेहतर खोज : (श्याम बेनेगल से नरेश शर्मा का संवाद)
107. सिनेमा के समानांतर ज़िंदगी : असीम सिन्हा
111. रचनात्मक और विविध संगीत : पंकज राग

लेख
114. सत्यजित रे : श्याम... : जयनारायण प्रसाद
115. समानांतर सिनेमा के... : जवरीमल्ल पारख
117. छत्तीसगढ़ और... : मुहम्मद ज़ाकिर हुसैन
119. एक सबाल्टर्न... : सुरेश कुमार जिनागल
123. सांप्रदायिकता के विरोध में : भूपेन्द्र यादव
124. यथार्थवाद सिनेमा के प्रणेता : श्याम किशोर

साक्षात्कार
126. फ़िल्मकार कारीगर नहीं...: गोकुल क्षीरसागर
128. हिंदी एक हालिया ज़बान है: रामदास तोंडे

रेतघड़ी
132

दो पाटन के बीच में...

कुछ ही वक़्त पहले अपने संपादकीय में इस संभावना पर विचार किया था कि ऐसे दिन भी देखने को मिल सकते हैं, जब ट्रम्प और पुतिन मिलकर पूरी दुनिया को खसोटने लगेंगे. मात्र तीन महीनों में यह दुःस्वप्न साकार होता दिख रहा है. आयात शुल्क की दरों से लेकर नाटो के ख़र्चों तक पर ट्रम्प एक निरंकुश सांड की तरह नथुने फड़का रहे हैं, सींग टकरा रहे हैं. असंवैधानिक निर्वासन पर अदालती आदेशों तक की धज्जियां उड़ा रहे हैं. अपने ही जजों को धमका रहे हैं. अभी गज़ा में उनकी ही हरी झंडी पर 400 से अधिक फ़िलिस्तीन नागरिकों का संहार कर दिया गया है. ब्रिक्स पर मर्सिया तो वे पहले ही पढ़ चुके थे. ई.यू. सहित नाटो को नेस्तनाबूद करने का मन बना चुके हैं. उसके साथ ही यूक्रेन को भी! यह हाल की ट्रम्प-ज़ेलेन्स्की वार्ता में शीशे की तरह साफ़ हो गया था. श्रीमान डॉनल्ड ट्रम्प और उनके उपराष्ट्रपति जे.डी. वैन्स ने ज़ेलेन्स्की के लिए पूर्व-नियोजित जाल बिछा रखा था जिससे बचना नामुमकिन रहा. इस मीटिंग की शुरुआत से ही ट्रम्प ज़ेलेन्स्की को खरोंचते रहे कि वह कुछ भी तीखा बोल पड़ें और शिकार खुद-ब-खुद चलकर उनके फंदे में फंस जाए. सबसे पहले उनके सूट न पहनने को लेकर मज़ाक़ उड़ाती टीका-टिप्पणी हुई जिसे ज़ेलेन्स्की ने अपने अंदाज़ में गरिमापूर्ण तरीक़े से निपटा दिया. जबकि हमारे प्रधान से लेकर अरब के शेख़ों तक 'सूट' कभी भी ट्रम्प के अपरिष्कृत सौंदर्य बोध के आड़े नहीं आया है. बहरहाल, यह तो सिर्फ़ शुरुआत थी. दुर्लभ खनिज के मसले को लेकर इन दो देशों में क़रार अपने नतीजे पर पहुंच ही रहा था कि युद्ध विराम में यूक्रेन द्वारा मांगी जा रही सुरक्षा की गारंटी पर उपराष्ट्रपति जे.डी. वैन्स भड़कते हुए ज़ेलेन्स्की से बदतमीज़ी पर उतर आए. मानो वह किसी राष्ट्राध्यक्ष से नहीं, बल्कि अपने पुरखों या अपने प्रेरणास्रोत और गुलामों पर कड़े सितम ढाने वाले निर्दयी अमेरिकी राष्ट्रपति एंड्रयू जैक्सन के किसी दास से बातें कर रहे हों. जब ज़ेलेन्स्की ने इस बदतमीज़ी का विरोध किया तब महाशय ट्रम्प पूर्वाभ्यासित क़वायद की तरह वैन्स की हां में हां मिलाते, चीखते-चिल्लाते उन पर टूट पड़े. ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह व्हाइट हाउस के ओवल ऑफ़िस का दृश्य न होकर पाब्लो एस्कोबार, जॉन गॉट्टी या दाऊद इब्राहिम की मांद में खेला जा रहा कोई डरावना ऐब्सर्ड नाटक हो!

– तुमने हमारा अपमान किया है, हां तुमने एक बार भी